यज्ञ में है विशेष शक्ति। सारे रोगों से देता मुक्ति ।।

भारतीय संस्कृति में यज्ञ, योग एवं आयुर्वेद जैसी अमूल्य विद्याएं हैं।

जो इस संस्कृति की 'मुकुटमणि' हैं।
इतिहास की ओर दृष्टि डालें, तो
'भगवान् श्री राम, भगवान् श्री कृष्ण'
से लेकर राजा -महाराजाओं, ग्रामवासियों व
अरण्यवासी-ऋषियों की कुटियों तक नित्य व
नैमित्तिक यज्ञों का प्रचलन देखने को मिलता है,
जो सार्वभौमिक, वैज्ञानिक एवं पंथनिरपेक्ष
पावनी परंपरा है।

यज्ञशिष्टामृतभुजो यान्ति ब्रह्म सनातनम्। -गीता -4.31
यज्ञ से बचे अमृत को खाने वाले यजमान परमात्मा को प्राप्त होते हैं।